ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 67-69
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

प्रादेशिक दृष्य चित्रण : कलाकार मदनलाल नागर के संदर्भ में

1. रुचिन वर्मा
2. डॉ0 ईश्वर चंद गुप्ता

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, धर्म समाज कॉलिज, अलीगढ़, (डॉ0 भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा) (उ0प्र0), भारत

Received-18.07.2023, Revised-25.07.2023, Accepted-30.07.2023 E-mail: chhavi1976@gmal.com

***सारांशः** कलाकार मदन लाल नागर का नाम 20वीं शदी के मध्य के महत्वपूर्ण कलाकारों में गिना जाता है। इनका जन्म लखनऊ नगर में हुआ तथा इनकी कला शिक्षा राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ में संपन्न हुई। मदनलाल नागर ने अपने विद्यार्थी जीवन में रेखांकन पर आधारित चित्र बड़ी संख्या में अंकित किये। समय के साथ धीरे–धीरे नागर जी के चित्रों में लखनऊ शहर की घनी बसावट वाले मोहल्लों की गलियां, इमारतें व प्रवेश द्वार इत्यादि विभिन्न अर्थों वाले संयोजनों के रूप में उभरते हुए दिखाई पड़ते हैं। आगे के वर्षों में चित्रित श्रृंखलाओं में शहर का दुख भरा मानवीय चेहरा एवं उदासी की पीड़ा का अंकन विभिन्न दृश्य चित्रों में दिखाई पड़ता है।*

कुंजीभूत शब्द– दृश्यचित्र कला, सिटी स्केप, समकालीन कला, कला एवं संस्कृति।

दृश्य चित्रण विधा समकालीन कला का एक अभिन्न अंग रही है। कला व संस्कृति के विकास के साथ–साथ इसका अपना एक इतिहास रहा है। 20वीं सती के मध्य के दशकों में हो रहे बदलावों, परिवर्तनों एवं कला के क्षेत्र में हो रही नवीन प्रवृत्तियों को अस्तित्व में लानें में जिन महत्वपूर्ण कलाकारों ने योगदान दिया उनमें कलाकार मदनलाल नागर का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है जिन्होंने थोड़े ही समय में प्रादेशिक स्तर की दृश्य चित्रकला में अपनी छाप छोड़ते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रकाश बिखेरा।

कलाकार मदनलाल नगर का जन्म लखनऊ के प्रसिद्ध कला प्रेमी परिवार में सन 1923 को हुआ था इनके पिता पंडित राजाराम नगर तबला वादक एवं शौकिया चित्रकार भी थे साथ ही कविताएं व नाटक भी लिखा करते थे। मदन लाल के बड़े भाई अमृतलाल नागर हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार उपन्यासकार भी थे। पिता की वर्ष 1935 में अकस्मात मृत्यु हो जाने के कारण परिवार में विभिन्न आर्थिक समस्याएं उपजने लगी किंतु संघर्षील रहते हुए मदनलाल नगर ने 1940 में लखनऊ के ही कालीचरण इंटर कॉलेज से हाई स्कूल की परीक्षा पास की। आपकी कल के प्रति रुचि स्कूली शिक्षा में ही दिखाई पड़ने लगी थी जिस कारण वहां के कलाध्यापक ने इन्हें लखनऊ कला विद्यालय में प्रवेश लेने व इसी क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। इसी क्रम में वर्ष 1941 में मदनलाल नगर ने लखनऊ के कला एवं शिल्प महाविद्यालय में दाखिला लिया। उन दिनों लखनऊ कला विद्यालय का वातावरण अत्यंत समृद्ध हुआ करता था एवं कलाकार असित कुमार हलदर महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में कार्यरत थे। कलाकार हलदार के अतिरिक्त वीरेश्वर सेन ललित मोहन सेन आदि प्रसिद्ध चित्रकार अध्यापकों के रूप में कार्यरत थे। नागर जी कलाकार बीरेश्वर सेन को अपना गुरु मानते थे, जबकि नागर जी के द्वारा चित्रित मुखाकृति चित्रों पर कलाकार ललित मोहन सेन की शैली का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है।

मदनलाल नगर ने अपने विद्यार्थी जीवन में कला के प्रायोगिक कार्यों पर स्वयं को केंद्रित किया। मदनलाल नगर कलाकार ललित मोहन सेन से भी प्रभावित रहते थे। ललित मोहन सेन विदेश से कला प्रशिक्षण ग्रहण करके आए थे एवं यूरोपीय एकेडमिक पद्धति द्वारा ड्रॉइंग व स्केचिंग करने पर अधिक जोर दिया करते थे। इसी से प्रभावित रहते हुए मदनलाल नगर ने अपने विद्यार्थी जीवन में रेखांकन पद्धति को आधार बनाते हुए बड़े स्तर पर रेखा चित्रण का अभ्यास किया। विद्यार्थी जीवन में नागर जी बड़ी संख्या में रेखांकन किया करते थे तथा वह अलग–अलग स्थानों पर जाकर रेखांकन करते हुए दृश्य रेखाचित्रों का निर्माण करते थे, जिन्हें उनकी रचनाओं के रूपकारों मे स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है।

मदनलाल नागर के आरंभिक रेखांकन अधिकांशतः पेंसिल व पेन में अंकित किए गए हैं। इन चित्रों में आत्मविश्वास से भरी हुयी रेखाएं कलाकार की दृष्टि एवं रेखांकन की सिद्धहस्तता की कहानी कहती हैं।

1946 में कला महाविद्यालय से कल डिप्लोमा पूर्ण करने के बाद नागर जी ने विशिष्ट शैली में चित्रांकन करना आरंभ किया तथा स्वतंत्र चित्रकार के रूप में दृश्य चित्रण के साथ–साथ व्यक्ति चित्र भी बनाए। समय के साथ–साथ कालागत तत्वों की समझ एवं संयोजन से संबंधित सौंदर्य बोध इनके भीतर अपना स्थान बना रहा था। आपके चित्र सृजन में दृश्य चित्रण के लिए विशेष आग्रह दिखाई पड़ता है जिस कारण आपके दृश्य चित्र अन्य कलाकारों की शैली से पूर्णता भिन्न हुआ करते थे। आरंभिक दृश्य चित्रों में खुला आकाश, विशाल मैदानों में फैले हुए खेतों के भूखंड, आकाश में उमड़ते बादलों के दृश्य, जंगलों व उनके पीछे फैली हुई विशाल पर्वत श्रृंखलाएं उदाहरण स्वरूप विशेष दर्शनीय हैं। लखनऊ कला विद्यालय में जल रंगों के प्रयोग की अपनी विशेषता रही है एवं यही विशेषता मदनलाल नगर के दृश्य चित्रों में भी देखी जा सकती है।

उनके जीवन में कलाकार के रूप में महत्वपूर्ण समय 1949 के आस पास का है जब उन्होंने कई बार मुंबई में अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई। उसे समय रजा, गायतोंडे, हुसैन आदि भी मुंबई में समकालीन कला को एक नया रूप देने का प्रयत्न कर रहे थे व इसी क्रम में नागर जी भी उसी आंदोलन के अंग बने। अप्रैल 1949 में लखनऊ नगर महापालिका ने अपने यहां एक प्रदर्शनी का आयोजन किया था इस प्रदर्शनी में उत्तर प्रदेश के लगभग सभी महत्वपूर्ण कलाकारों ने भाग लिया था। महानगर पालिका के अधीन इस कला वीथिका की जिम्मेदारी श्री मदनलाल नगर को सौंप गई थी। इसी कला वीथिका में महत्वपूर्ण प्रादेशिक कलाकारों की मूल्यवान कृतियों का संग्रह भी है। वर्ष 1956 के आसपास मदनलाल नागर ने लखनऊ कला महाविद्यालय में अध्यापक के रूप में प्रवेश किया जहां उन्हें अपनी कार्य क्षमता दिखाने का एक नया अवसर मिला। समय के साथ चित्र आकारों, रंग रूपों व संयोजन के बारे में उनका एक विशेष

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

दृष्टिकोण विकसित हो गया था एवं धीरे धीरे उनके चित्रों में प्रखर रंगों का प्रयोग कम होता व धूमिल तानों वाले रंगों का प्रयोग अधिक होता हुआ दिखता है। मदनलाल नगर देश के उन चित्रकारों में से एक हैं, जिन्हें अपनी जिंदगी व लोगों की विडम्बनायें बेचैन करती थी, जिससे बीच–बीच में अमूर्तन का प्रभाव भी उनके चित्रों पर हावी होता दिखाई पड़ता है किंतु धीरे –धीरे उनके मन के भीतर के अंतर्द्वन्द एवं अमूर्तन का आधार स्पष्ट होता है व उनकी कला में एक नगरीय संस्कृति के दर्शन होनें लगते हैं। नगरों की संरचना के माध्यम से वे जिंदगी एवं उसकी परंपराओं व संस्कृति को पकड़ने का सफल प्रयास करते दिखाई पड़ते हैं शायद इसीलिए उनकी कृतियों में मानवाकृतियां कम दिखाई पड़ती हैं किंतु उनकी रचनाओं में तत्कालीन नगरीय संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

नागर जी मानते थे कि मनुष्य को उसके रूपकार ही नहीं बल्कि समाजतंत्र व उसके बदलते परिप्रेक्ष्य जो कि कई बार विकृत एवं जटिल होते हैं, भी सुंदर बनाते हैं। अपनी रचनाओं में नगरों और गलियों की संरचना के पीछे उनका प्रायः यही उद्देश्य रहा, क्योंकि बिना मनुष्य के गालियां और नगर अस्तित्व विहीन है नगरों को मनुष्य बसाते हैं और उनके घरों व गलियों में उनकी जिंदगी व्यतीत होती है। मनुष्य के बिना समाज की रचना संभव नहीं है किंतु दृश्य चित्रों में यह बात सटीक नहीं बैठती। दृश्य चित्रों में प्रकृति का वृहत्तम रूप होता है इसीलिए दृश्य चित्रों के सृजन के समय प्रकृति के पल– छिन को पकड़ने के लिए कलाकार को इतना सचेत रहना पड़ता है कि प्रायः वह स्वयं को भूल सा जाता है वह ऐसे ही क्षणों में चित्र में अमूर्तन के प्रवेश की संभावना भी बनती है। कई अमूर्त और अति यथार्थवादी शैलियॉं भी नागर जी की कला यात्रा में आई और इन पड़ावों से गुजरने के बाद वे नगर संस्कृति की जटिलता की गहराई तक पहुंच सके। चित्रों मे किया गए विषेश रेखांकन नागर जी की कला की एक खास विशेषता रही है।

नागर जी के छात्र जीवन के समय बनाए गए चित्र उनके द्वारा प्रकृति, व्यक्तित्वों एवं आकारों की खोज तथा अपने लिए उचित अभिव्यक्ति माध्यम तलाशने की ओर संकेत करते हैं। अध्ययन की दृष्टि से नागर जी की कृतियां कुछ महत्वपूर्ण भागों में विभाजित की जा सकती हैं। 1945 से 1955 तक के समय के मध्य नागर जी द्वारा बनाये गये चित्रों को देखें तो ज्ञात होता है कि किस प्रकार कलाकार ने स्वयं से जूझते हुए संघर्षों के मानस बिम्ब चित्रित किए हैं। इस समय के मध्य सृजित की गई कृतियों में ऐसे सभी प्रभावों

सिटी स्केप्स, कलाकार मदनलाल नागर

का अध्ययन किया जा सकता है, जो कलाकार अपनी स्वायत्तता बनाने के दौरान ग्रहण करता है इनमें प्रभाववादी, अति यथार्थवादी, व एकेडमिक आदि विभिन्न शैलियों के चित्र देखने को मिलते हैं, किन्तु कहीं न कहीं इन कृतियों में एक उभरता हुआ व्यक्तित्व दिखाई पड़ता है। द्वितीय खंड लगभग 1957 से 1964 तक की कृतियों का है जिनमें यथार्थवादी शैली से निकलकर प्रभाववादी शैली सहित अन्य सामाजिक विषयों व समस्याओं के विश्लेषण का प्रयास स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इन कृतियों के विषय मूलता वैचारिक है जहॉं लयात्मक रेखाओं एवं संयोजन पर विशेष बल दिया गया है। इसके पश्चात की कृतियों में शहर व उनकी सांकेतिक अभिव्यक्तियां उजागर होती दिखाई पड़ने लगती हैं, जो आगे चलकर नागर जी की कला अभिव्यक्ति की विशेष पहचान बनी। धीरे–धीरे नागर जी की कृतियों में शहर के बजाय गलियों पर केंद्रित संयोजन अधिक दिखाई पड़ने लगते हैं। लखनऊ शहर के पुरानें मोहल्लों मे फैली टेढ़ी–मेंढ़ी गलियों की उदासी– खोयापन, सन्नाटे भरी रातें, उजियारें दिन विभिन्न आयाम एवं स्तरों में प्रकट होते दिखाई पड़ते हैं।

तीसरा चरण जोकि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है एवं 1964 के बाद से आरंभ होता है इस समय में अधिकांशत ऐसी कृतियां

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

आती हैं, जिनके विषय शहर की विभिन्न मनोदशाओं से जुड़े हुए हैं। वह शहर जिसे उन्होंने भलीं प्रकार से देखा वह समझा है, जिसकी टेढ़ी–मेढ़ीं गलियां ऊंचें–नीचे मकान व उनमें लगे हुए विशाल दरवाजे, विशाल खुले प्रवेश द्वार एक विशेष प्रकार के संयोजन की कहानी कहते हैं। नागर जी की कला का यह चरण ऐसी मानसिक छायाओं की पुनरावृत्ति पर आधारित है, जो उन्हें एक अलग विशेषता प्रदान करती है नागर जी की इन कलाकृतियों में जो मौलिकता दिखाई पड़ती है। वह संभवतः उन्हें चारों ओर फैले स्थापत्यों से ही ग्रहण करते हैं।

सन् 1956 में मदनलाल नगर ने लखनऊ के ललित कला महाविद्यालय में कला शिक्षक के रूप में कार्य आरंभ किया। यहां पर उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए कलाकार बनने की दिशा में कठिन साधना आरंभ की। चित्रण कार्य करने के साथ–साथ इन दिनों मदनलाल नगर ने पुस्तकों के बुक कवर इत्यादि भी डिजाइन किये, जिसमें इन्होंने अपने बड़े भाई अमृतलाल नागर, हरिवंश राय बच्चन, सुमित्रानंदन पंत इत्यादि के उपन्यासों की पुस्तकों के बुक कवर बनाए। 1964 के आस–पास मदन लाल नगर के दृश्य चित्रों की सिटीस्केप्स श्रृंखला में उनकी व्यक्तिगत शैली के दर्शन होते हैं इस समय के चित्रों में विभिन्न सतही टेक्सचर्स के साथ–साथ रंगों को पतला करके प्रयोग किया गया है, साथ ही चित्रों में लखनऊ की भव्य भवन निर्माण कला नमूनों के दर्शन भी किया जा सकते हैं। शहरी दृश्य चित्रण की दूसरी श्रृंखला में लखनऊ शहर की पुराने मोहल्लों की भूलभुलैया जैसी पतली–सॅकरी गलियों और दीवारों का झुंड देखने को मिलता है। नागर जी ने वहां की गलियों और मोहल्लों में घूम–घूम कर अध्ययन चित्र बनाए। 1975 के आसपास बनाए गए चित्र संयोजनों में गहरे तथा भूरे रंगों का अधिक प्रयोग देखने को मिलता है इन चित्रों में लहरदार घूमती हुई सूनी गलिया, इमारतों की खुली खिड़कियां व अलंकृत दरवाजे शहर की वीरानी को बयान करते दिखते हैं। 1980 के आसपास बने चित्रों में दर्शायी गई रहस्यमई गलियों इत्यादि का दुख भरा मानवीय चेहरा पटल पर प्रतिबिंबित होने लगता है। यह नागर जी के चित्रों में दिखाई देने वाला एक ऐसा बदलाव था, जो शहरी जीवन की उदासी के प्रति उनकी तत्कालीन मनः स्थितियों को व्यक्त करता है। इस पीड़ा को दर्शाते हुए नागर जी ने अनेक शहरी दृश्यों का अंकन किया है। ऐसे संयोजन चित्रों में 'सिटी गेट', 'एन ओल्ड सिटी', 'सिटी लेंस', 'द सिटी', 'गणेश गली' आदि विषेश हैं।

मदनलाल नगर को कला क्षेत्र में इस ऊंचाई तक पहुंचने में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का विशेष योगदान रहा। नागर जी का विवाह वर्ष 1960 में कृष्णा से हुआ जो कि उन्ही की शिष्या भी रहीं थीं। अवसाद के क्षणों में उनकी पत्नी ने सदैव उनका मनोबल बढ़ाया। एक सुखद, स्वस्थ व कलात्मक वातावरण के साथ दांपत्य जीवन बिताते हुए वर्ष 1984 को मदनलाल नागर जी का देहांत हुआ।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख कलाकारों द्वारा समकालीन कला में दिए गए योगदानों के वास्तविक पुनरूत्पादन से प्रादेशिक कला की पृष्ठभूमि निश्चित ही समृद्ध होगी। दृश्य चित्रण के क्षेत्र में नागर जी के द्वारा दिया गया योगदान अमूल्य माना जाता है एवं नवोदित कलाकारों के लिए नागर जी की कृतियां सदैव प्रेरणादाई साबित होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कक्कड़ कृष्ण नारायण, साप्ताहिक दिनमान, 28 अक्तूबर–03 नवंबर 1979, लखनऊ।
2. अग्रवाल गिर्राज किशोर, भारतीय आधुनिक चित्रकला, संजय पब्लिकेशन, आगरा।
3. मिश्र, अवधेश, क्षेत्रीय समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली।
4. मिश्र, अवधेश, पहला दस्तावेज़ : उ०प्र० की कला के आधार स्तम्भ, प्रलेक प्रकाशन, महाराष्ट्र।
5. Bhatnagar Shefali, Variegated Vista, Shubhi Publication, Gurgaon.

*****